– डॉ. सुमित पी.वी.

समलैंगिकता का सवाल और मलयालम सिनेमा

सारसंक्षेप – यह शोधालेख मुख्य रूप से मलयालम फिल्म क्षेत्र को समझने के लिए सहायक साबित होगा। हमारा समाज आज भूमंडलीकरण के अंतिम दौर से गुजर रहा है। जनता सूचना तथा संचार क्रांति के भागीदार होकर आगे बढ़ रही है। फिल्में लोगों को विभिन्न सामाजिक कार्यकलापों से रूबरू कराने के लिए सहायक साबित हो रही है। उन फिल्मों में समलैंगिकता को किस तरह चित्रित किया जा रहा है। इसे देखने–परखने का प्रयास मैंने लेख में किया है। मलयालम फिल्म के इतिहास पर दृष्टि डालें तो यह साफ पता चल जाएगा कि पुराने समय से लेकर समलैंगिकता को लेकर काफी फिल्में बनी हैं, लेकिन आज भी उक्त बात को सफल तरीके से अभिव्यक्ति नहीं दे पायी है। यह एक विडंबना है।

मुख्य शब्द (key words) :

मलयालम सिनेमा, समलैंगिकता, वयस्क फिल्में, हिजड़ा, लैंगिकता, सामाजिक सरोकार, क्वीर ऐडेंडिटी

"समाज और बाजार एक दूसरे से जुड़े हैं। बाजार समाज का ही एक अंग है। बाजार भी हमें चाहिए। आज का आधुनिक समाज ऐसा है, जिसके बाजार में सब कुछ बिक रहा है। अभी समाज में बाजार के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। आधुनिक समाज में मैटेरियलिज्म बढ़ रहा है। लोगों को समझ में नहीं आ रहा है कि क्या करें। यह अच्छा है या बुरा, हमें तय करना है। हमारे पास ऐसी कसौटी होनी चाहिए, जिसके आधार पर हम मैटेरियलिज्म का मूल्यांकन कर सकें और उसी के आधार पर उसका विरोध भी। हिन्दी सिनेमा के पास न तो कोई कसौटी है और न ही प्रवृत्ति के खिलाफ कोई कुछ कर रहा है। हिन्दुस्तान में अभी जितनी भी फिल्में बन रही हैं, उनका पंचानवें प्रतिशत समाज के लिए कुछ नहीं कर रही हैं।"[1]

उपर्युक्त कथन के सिलसिले में दो राय हैं। क्योंकि जहां मृत्युंजय जैसे फिल्म समीक्षक ने फिल्मों की अर्थ शून्यता की बात पर रोने लगे हैं, वहीं कुछ ऐसी फिल्में भी बन रही हैं जो एक साथ व्यक्ति को, समाज को

तथा दुनिया को सतर्क रखने के लिए लक्षित होती हैं। उनमें समलैंगिक फिल्मों का भी स्थान है। 'समलैंगिक' (homosexuality) शब्द का उपयोग उनके लिए होता है जो प्यार के कारण समान लिंग के लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं। अगर इस बात को थोड़ा और गहराई से समझें तो यह एक ऐसा मामला है जिसमें व्यक्ति का समान लिंग के लोगों के प्रति यौन और रोमांसपूर्वक रूप से आकर्षण होता है। साधारण रूप से समाज में पुरुष का स्त्री के प्रति और स्त्री का पुरुष के प्रति आकर्षण देखा जाता है। लेकिन कुछ ऐसे भी लोग हैं जिनमें पुरुष का पुरुष के प्रति और स्त्री का स्त्री के प्रति आकर्षण दिखाई देता है। इसमें प्रथम वर्ग के लोगों को अंग्रेजी में 'गे' और दूसरे वर्ग के लोगों को 'लेस्बियन' कहा जाता है। हिन्दी में दोनों के लिए 'समलैंगिक' शब्द प्रचलित है। "व्यक्ति समाज की परवाह न करते हुए अपनी मन–मर्ज़ी से जीवन जीने में विश्वास करता है। यही कारण है कि समलैंगिकता जैसी अप्राकृतिक, असामान्य तथा विकृत अवधारणा को कुछ लोगों ने न सिर्फ़ अपनाया अपितु इसे एक आँदोलन का रूप देकर समलैंगिक समुदाय को समाज में मान्यता, प्रतिष्ठा तथा अधिकार दिलाने का भी प्रयास किया। वहाँ समलैंगिकता शर्मनाक या बुरी बात न मानकर इसे व्यक्तिगत अस्मिता और अस्तित्व का प्रश्न बनाकर प्रस्तुत किया। समलैंगिकता की अवधारणा चूँकि प्रकृति के नियमों के विरुद्ध है इसलिए इसे किसी भी दृष्टिकोण से मानव जाति के लिए हितकर नहीं माना जा सकता है। अप्राकृतिक–शारीरिक–यौनिक संबंध एड्स जैसी भयंकर बिमारियाँ को जन्म दे सकते हैं, समाज में गृहस्थ–आश्रम को खंडित कर सकते हैं। संतान–उत्पत्ति तो संभव ही नहीं है। इससे तो मानसिक कुंठाएँ, अवसाद जैसी विकृतियाँ ही जन्म लेंगी।"[2]

हमारा समाज आज भी उस मुकाम तक नहीं पहुंचा कि प्यार करने वाले कोई भी हों, उनको तसल्ली से जीने दें। पुरुष का पुरुष से या स्त्री का स्त्री से प्यार होना उनकी निगाहों में अब भी घोर अपराध ही है। उससे बढ़कर यह एक तरह की मानसिक बीमारी के रूप में माना जा रहा है। किसी एक व्यक्ति के इस निजी मामले में समाज द्वारा घुसपैंठ करने की रीति–नीति को सिनेमा किस तरह देख रहा है – यह बिलकुल नया विषय है। मलयालम सिनेमा क्षेत्र में 1970 के जमाने से लेकर इस तरह के विषयों को लेकर फिल्में बने चुकी हैं। फिर भी लोगों की मानसिकता में बदलाव लाने में उतना मात्र पर्याप्त नहीं है। "विश्व सिनेमा को देखते हुए यह ज्ञात होता है कि जो देश जितना पिछड़ा हुआ है वहां का सिनेमा उतना ही तड़क–भड़क वाला है। उदाहरण के लिए सिने उत्पादन में तीसरे नंबर का देश नाइजेरिया को लिया जा सकता है। नाइजेरिया की फिल्मों में अपराध, सेक्स और तड़क–भड़क ज्यादा दिखाया जाता है। जबकि वहां के समाज में इस तरह की गतिविधियां न के बराबर हैं। वहां के लोग मेहनत मजदूरी करके गुजर–बसर करते हैं। यदि कोई वहां के सिनेमा के माध्यम से उस देश की आर्थिक और सामाजिक सच्चाई जानने की कोशिश करे तो उसे सफलता नहीं मिल सकती।"[3]

1978 में आई फिल्म ‘रण्डु पेनकुट्टिकल’ (दो लड़कियां) समलैंगिकता की दिशा में पहला कदम माना जाना चाहिए। क्योंकि तब तक इस ओर निर्देशकों का ध्यान नहीं गया था। सुरासु की पटकथा के साथ मोहन द्वारा निर्देशित इस फिल्म का आधार वी टी नंदकुमार के इसी शीर्षक का उपन्यास था। लेस्बियनिज्म को आधार बनाकर मलयालम में प्रकाशित प्रथम उपन्यास भी यही है। एक ही स्कूल में पढ़ने वाली कोकिला, गिरिजा आदि लड़कियों के बीच का प्यार फिल्म का मुख्य विषय है। शोभा, अनुपमा मोहन, विधु बाला, जयन, सुकुमारन आदि मशहूर अभिनेताओं ने पात्रों को जीवंत बनाया। कोकिला को गिरिजा से प्यार हो जाता है और वह गिरिजा के सबसे करीब आने की कोशिश भी करती है। दोनों का घनिष्ठ संबंध भी हो जाता है। लेकिन उसी समय गिरिजा का किसी दूसरे पुरुष से भी प्यार होता है। इस कारण से दोनों के बीच दरार पैदा हो जाती है। अंत में दोनों लड़कियां अलग–अलग पुरुषों के साथ जीने के लिए मजबूर हो जाती हैं। जिसे फिल्म में सामान्य और स्वाभाविक ढंग से दिखाया गया है। “सिनेमा को अपने समाज का, अपने समय का प्रतिबिंब होना चाहिए। जैसे आप अपने को आईने में देखते हैं, वैसे ही फिल्म के माध्यम से समाज को उसमें देख सकें। पचास के दशक में एक ही तरह का सिनेमा था। .... सिनेमा की एक विशेषता यह भी है कि यह अपने दर्शक को कभी नजरअंदाज नहीं कर सकता। यह बात साहित्यकारों के बारे में नहीं कही जा सकती। सिनेमा का अस्तित्व दर्शकों के अभाव में संभव नहीं है। हम आम आदमी की बहुत बात करते हैं। लेकिन आम आदमी का साहित्य से उतना संबंध नहीं है जितना फिल्म का है। इसलिए कला की इस विधा की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।”[4] स्त्री लैंगिकता से जुड़े पॉपुलर सिनेमा का इतिहास हमेशा वयस्क फिल्मों (Adult movies) की श्रेणी में आता है। मुख्यधारा के संचार माध्यमों में समलैंगिकता का विषय अभी हाल ही में चर्चा करने लगा है अर्थात् कोई बहुत पुराना इतिहास इस संबंध में नहीं है। लगभग 20 साल पहले दीपा मेहता ने ‘फयर’ फिल्म के माध्यम से समलैंगिकता की आग पहली बार लगाई। “नया अध्ययन यह कहता है कि क्वीर ऐडेंडिटी के बारे में बात करने वाली मलयालम की पहली फिल्म ‘देशाडनक्किलि करयारिल्ला’ है।”[5] फिर भी किशोर बालिकाओं की आकुलताओं के बारे में, भिन्न लैंगिकता के बारे में, उसके प्रति समाज के कठोर रवैये के बारे में पद्मराजन ने सालों पहले अपनी बात रखी है। 1986 में रिलीज हुई फिल्म ‘देशाडनाक्किलि करयारिल्ला’ भी कुछ इस तरह के विषय को लेकर तब हमारे सामने प्रस्तुत हुई थी। तब केरल के सामान्य दर्शक वर्ग को यह बात स्वीकार करना मुमकिन नहीं था कि स्त्री का स्त्री से प्यार और सेक्स संबंध भी होता है। पद्मराजन की फिल्मों में सबसे अधिक अंडर रेटेड फिल्म भी यही थी। “अध्यापिका से गुस्सा होकर स्कूल से भाग जाने वाली दो लड़कियां। वे अनजान जगहों मे जाकर रहने लगती हैं और अंत में खुद को भी खत्म कर डालती हैं। इतनी बड़ी सोच को

पद्मराजन ने हमारे सामने प्रस्तुत किया तो भी सिर्फ लेस्बियनिज्म के नजरिए से आलोचकों ने प्रस्तुत फिल्म को देखा–परखा। इसमें कोई दो राय नहीं है कि कहानी की मूल बिंदु को लेकर मलयालम का सबसे बड़ा और बॉल्ड परीक्षण है यह फिल्म।"[6]

2004 में लिजी जे पुलप्पल्ली द्वारा निर्देशित फिल्म बनी 'संचारम'। बचपन की दोस्त डेलिला और किरण के बीच के प्यार को फिल्माया गया था। डेलिला के प्रेमी राजन के नाम से प्रेम पत्र किरण लिखती थी। डेलिला से अपने प्यार को परिवार के किसीके जाने बिना रहस्य बनाकर रखने में यह मददगार होता है। अंत में जब पता चलता है कि प्रेम पत्र किरण लिखती थी तो डेलिला सहमत हो जाती है कि उससे वह भी प्यार करती है। राजन ये सारी बातें डेलिला की मां को बताता है तो उसकी शादी कराने का निश्चय किया जाता है।

2013 की फिल्म 'मुंबई पुलिस' चर्चित गे फिल्म होने के बावजूद उसके पात्र, विचार और आदर्श के तर्ज पर अनुकरण के योग्य नहीं हैं। फिल्म के पात्र एंटणी मोसेस और उसके प्रेमी दोनों अपनी गे पहचान को पूरी तरह छुपाकर जीने वाले होते हैं। समलैंगिकता कोई मानसिक बीमारी या जुल्म नहीं है। लेकिन एक वयस्क व्यक्ति अपनी समलैंगिकता को छुपाकर जीता है तो धीरे–धीरे वह मानसिक तनाव एवं मानसिक बीमारी का शिकार हो जाता है। फिल्म की कहानी भी इसी बात पर जोर देती है। "सिनेमा के दर्शक सिनेमा से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं। यह और बात है कि वह स्वीकार और अस्वीकार के अपने व्यक्तिगत मानदंडों की कसौटी पर सिनेमा को स्वीकार एवम् अस्वीकार करता रहता है।"[7] 'मुंबई पुलिस' में स्मृति नष्ट होने पर नायक अपनी लैंगिक इच्छा (sexual orientation) तक भूल जाता है। आलोचकों की यह राय रही है कि स्मृति नष्ट के संदर्भ में अपने पार्टनर को भूल सकता है मगर अपनी लैंगिकता को कोई भूलता नहीं है। इसे फिल्म की पटकथा और निर्देशन की कमी के रूप में उस समय देखा गया। इस बात को पद्मराजन ने 'इन्नले' नामक फिल्म में शोभना के पात्र के माध्यम से बेबाक ढंग से चित्रित किया है। "चूँकि फिल्म एक व्यवसाय है और यह व्यवसाय सीधे दर्शकों पर निर्भर करता है, इसलिए फिल्म की घोषणा के समय से लेकर फिल्म की रिलीज तक दर्शकों को प्रभावित करने की कोशिश की जाती है। पहले फिल्म पत्रकार साक्षात्कार, मुलाकात और प्रत्यक्ष अनुभवों के जरिए फिल्मों से संबंधित जानकारियां देते थे और आगामी रिलीज के लिए दर्शक तैयार करते थे। इसमें वक्त लगता था मगर उसका पूरा असर होता था।"[8] अर्थात् 'मुंबई पुलिस' भी अपने दर्शक को उम्मीद के बराबर आनंदित कर पाने में सक्षम साबित नहीं हुई। लेकिन फिल्म बॉक्स ऑफिस में हिट हुई। बॉबी–संजय की पटकथा, रोशन एंड्रूस का निर्देशन और पृथ्वीराज का अभिनय आदि के कारण फिल्म को केरल राज्य बेस्ट फिल्म पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

केरल राज्य की सरकार की ओर से बेस्ट दूसरी फिल्म, बेस्ट अभिनेता आदि के पुरस्कार जीतने वाली 2014 की फिल्म 'माई लाइफ पार्टनर' भी समलैंगिकता की थीम को लेकर दर्शकों के सामने आई। केरल के सिर्फ छह फिल्म हॉलों में इस फिल्म का प्रदर्शन हुआ था। सिनेमा हॉलों के मालिक इस बात से डरते थे कि सामान्य दर्शक इस फिल्म को स्वीकार नहीं करेंगे। 'मुंबई पुलिस' के बाद यह दूसरी फिल्म है जिसमें समलैंगिक पुरुष नायक पात्र को दिखाया गया था।

2019 की फिल्म 'उडलाष़म' गुलिकन नामक हिजड़ा युवक की कहानी प्रस्तुत करती है। फिल्म का प्रदर्शन केरल अंतर्राष्ट्रीय फिल्म मेला, जियो मामी मुंबई फिल्म फेस्टिवल आदि में किया गया तथा फिल्म क्रिटिकों द्वारा काफी सराहा गया। अपनी 14 वीं उम्र में विवाहित होने वाला गुलिकन उसके बाद अपने व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों को पहचानता है। तदनंतर उसकी जिन्दगी में होनेवाली विभिन्न समस्याओं को फिल्म रेखांकित करती है। शरीर की राजनीति तथा समाज द्वारा शरीर को किस तरह नापा जा रहा है आदि बातों की चर्चा फिल्म करती है।

2018 की फिल्म 'ञान मेरिक्कुट्टी' अपने इतिवृत्त को लेकर चर्चित रही। फिल्म समीक्षकों के अनुसार यह एक ऐसी उत्तम फिल्म है जिसे संपूर्ण दुनिया उदाहरण के तौर पर मान सकती है। हम सब विशेषकर केरल के स्वकथित बुद्धिजीवि लोग जो खुद को विकासोन्मुख मानते हैं, आज भी अपनी सोच को, अपने विचार को चार दीवारों में कैद कर रखा है। मानसिक रूप से स्त्री या पुरुष न होकर दोनों के बीच में होने वाले लोगों की जिन्दगी को उसकी लायक अहमियत के साथ यहां पर प्रस्तुत किया गया है। जीवन की तमाम आकुलताओं एवं अडचनों को पार कर अपने स्त्री शरीर और मन के साथ पुलिस अफसर बनने की इच्छा को साकार करने वाला पात्र है मेरिक्कुट्टी। वाकई भारतीय सिनेमा में हलचल मचाने वाली फिल्म है – ञान मेरिक्कुट्टी।

2016 की फिल्म का 'बॉडी स्केप्स' का निर्देशन जयन चेरियान ने किया। समलैंगिक प्यार को बढ़ावा देने की बात कहकर फिल्म सेंसर बोर्ड ने कई बार फिल्म की रिलीजिंग पर रोक लगाई। अंत में समलैंगिक प्यार पर उच्चतम न्यायालय की सुनवाई के बाद फिल्म रिलीज हुई।

2019 की फिल्म 'मूत्तोन' में भी समलैंगिक प्यार की बात कही गयी है। गीतु मोहनदास के निर्देशन में आई प्रस्तुत फिल्म के द्वारा मलयालम में पहली बार दो पुरुषों के बीच के प्यार को दर्शकों ने सराहा। अपने भाई की तलाश में निकलने वाला लक्षद्वीप निवासी लड़के की कहानी में निविन पोली का नायक पात्र अकबर को अमीर नामक अपने मूक दोस्त से होने वाला प्यार ही फिल्म की मूल बिन्दु है।

समलैंगिक प्रेमियों को, सुनने/देखने/आनंद देने योग्य कला रूपों को सामान्य रूप से 'होमो इरोटिका' नाम से संबोधित करते हैं। पुराने भारत के साथ अधिकांश देशों में, उनके पुराण–इतिहासों में, कलाओं में होमो इरोटिका के होने की बात को समलैंगिक प्रेमियों ने उत्साह के साथ स्वागत किया। इसमें सबसे पुराने आविष्कार यवन पुराण तथा मिस्र की संस्कृतियों में हुआ था। समलैंगिक प्यार को किसी जमाने में 'ग्रीक लव' नाम से पुकारते थे। समलैंगिकता को जुल्म के रूप में स्थापित करने वाला भारतीय संविधान के अनुच्छेद 377 का उच्चतम न्यायालय द्वारा 2018 सितंबर 6 को ध्वंस्त किया गया था। इसके फलस्वरूप समलैंगिक प्यार का समाज के विभिन्न कोणों में सक्रिय होता नजर आ रहा है। सदियों से नायक–नायिका के प्यार की बातों से परिपुष्ट मलयालम सिनेमा क्षेत्र में उसी तरह, या उससे बढ़कर समलैंगिक फिल्मों पर चर्चाएं होती हैं तो हम मान सकते हैं कि समकालीन मलयालम सिनेमा विभिन्न दृष्टिकोणों को लेकर तरक्की कर रहा है।

संदर्भ सूची

1. हिन्दी सिनेमा का सच, संपादक मृत्युंजय, फ्रैंप
2. साहित्य कुंज, अंक 162, अगस्त 2020, पृ.31
3. निरुप्रह, त्रैमासिक पत्रिका, जून–अगस्त 2015, पृ. 12
4. सिनेमा और संस्कृति, राही मासूम रज़ा, पृ.13
5. स्टार एंड स्टाइल पत्रिका, मई 2022, पृ.42
6. स्टार एंड स्टाइल पत्रिका, मई 2022, पृ. 54
7. सिनेमा और संस्कृति, राही मासूम रजा, पृ. 23
8. सिनेमा और संस्कृति, राही मासूम रजा, पृ. 71

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पीआरएनएसएस कॉलेज, मट्टनूर,
कण्णूर , केरल 670702, sumithpoduval@gmail.com